आदी धार्मिक लोकगाथाएं : एक अवलोकन

ईड़ परमे

प्रो. ओकेन लेगो

विविध विद्वानों ने लोक साहित्य के कई वर्गीकरण प्रस्तुत किए हैं। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकसाहित्य को पाँच भागों में विभाजित किया यथा लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य और लोकसुभाषित। शोधार्थी ने डॉ. कृष्णदेव जी के वर्गीकरण को अपनाया है। आदी लोकसाहित्य को सामान्यतः चार श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। अध्ययन के पश्चात शोधार्थी को आदी लोकसाहित्य में लोकनाट्य अप्राप्त है जो उपर्युक्त वर्गीकरण से स्पष्ट हो जाता है।

आदी लोकगाथाएँ मौखिक रूप में विद्यमान हैं। इस समाज की लोकगाथाएँ समृद्ध हैं। लोकगाथाओं में कथात्मकता का तत्व और गेयता दोनों ही बराबर रूप से विद्यमान हैं। ये लोकगाथाएँ आकार में बड़ी और लंबी होती हैं। आदी गाथाओं का विषय विस्तृत है। सृष्टि, मनुष्य, भिन्न सजीव और निर्जीव वस्तुओं की उत्पत्ति, मनुष्य के जीवन से जुड़े प्रत्येक पक्षों का वर्णन किया जाता है। आदी लोकगाथाओं को विशेष अवसरों पर गाया जाता है जिसे केवल विशेषज्ञ ही गाते हैं। विशेषज्ञ को आदी भाषा में 'मीरी"[1], 'ताबे"[2], 'न्यीबू"[3], 'न्यीबो"[4], 'गोमेमाकी"[5], 'कारी"[6], कहते हैं। गाथाओं को गाना आसान नहीं है। इसे हर कोई नहीं गा सकता है। परंतु गाथाओं की जानकारी अधिकतर बड़े बुजुर्गों को होती है। स्त्री और पुरुष दोनों ही विशेषज्ञ होते हैं। परंतु वर्तमान में महिलाओं की तुलना में पुरुष ज्यादा है। महिला गाथाकारों की संख्या न के बराबर है। आज की तारीख में पुरुष गाथाकारों की संख्या भी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। लोकगाथाओं का आदी समाज में विशेष स्थान है। जो लोक कंठों में ही उत्पन्न और विकसित होता है। आदी लोकगाथाओं को गाते समय वाद्ययंत्र का विशेष प्रयोग नहीं किया जाता है। केवल 'आबाड़'[7], 'आयीतमीरी"[8] के प्रस्तुति में 'योकसा' दाव का प्रयोग करते हैं। त्योहारों में गायी जाने वाली गाथाओं में 'कीरीड़"[9] का भी प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य वाद्ययंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है। आदी संस्कृति में 'योकसा' की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दाव के आकार का होता है। इसमें 'सापेर सालह'[10] लगा होता है जिसे हिलाने पर झंकार निकलता है। इसकी खनक की धुन में पुजारी झूमते हुए गाथाओं को गाते हैं।

आदी लोकगाथाओं को गाने की अनेक शैलियाँ हैं। प्रत्येक शैलियों की प्रस्तुति में भिन्नताएँ हैं। इन लोकगाथाओं को सामान्य गीतों की तरह नहीं गाया जाता है। इन लोकगाथाओं को प्रस्तुत करने की कई शैलियाँ हैं।

आदी देश में प्रचलित लोकगाथाओं के अनेक रूप प्राप्त होते हैं। आदी गाथाओं की कथा बहुत विस्तृत है तो कुछ गाथाएँ संक्षिप्त भी हैं। विवेचित लोकगाथाओं को निम्नलिखित वर्गीकरण से समझा जा सकता है-

1. धार्मिक आदी लोकगाथाएँ

2. उत्पत्तिपरक आदी लोकगाथाएँ

3. अनुष्ठानिक आदी लोकगाथाएँ

4. प्रेमपरक आदी लोकगाथाएँ

5. स्थानीय एवं वैदिक देवी-देवताओं से संबंधित आदी गाथाएँ

6. वंश परंपरा से संबंधित आदी लोकगाथाएं

7. मनोरंजन संबंधी आदी लोकगाथाएँ।

प्रस्तुत आलेख में धार्मिक आदी लोकगाथाओं का विवेचन किया जाएगा।

धार्मिक आदी लोकगाथाएँ

सभ्य कहे जाने वाले विकसित संस्कृति प्रकृति का दोहन करती है। जिससे आदिवासी संस्कृति का अस्तित्व खतरे में हैं। आदी समाज प्रकृति के सहचर है, वे प्रकृति के साथ तारतम्य बैठाते हैं, प्रकृति उन्हें आगे बढ़ने की प्ररेणा देती है। डॉ. न्योरी कहते हैं-

"They tried to adjust themselves with the nature and wanted to live in peace and free from diseases, suffering and misfortune. Their curiosity to know who was the creator and controller of the phenomena of the nature led them to invent anumber of explanations in the form of myths which are embodied in the ballads called abangs by the Padam-Minyongs."[11]

उपासना करने के लिए कोई विशिष्ट स्थान मंदिर- मस्जिद, गिरिजा घर नहीं है। इनके धार्मिक स्थल तो खुला आकाश है। प्रकृति ही इनका मंदिर, मस्जिद है। यह कहीं भी अपनी उपासना कर सकते हैं। आदी समाज आकृति का नहीं बल्कि प्रकृति का पुजारी है। आकृति और मूर्तिपूजक नहीं है। प्रकृति के साथ आदीयों का संबंध उतना ही पुराना है जितना इनका जीवन।

आदीयों में समय-समय पर पशु बलि प्रदान करने की परंपरा है। आदी समाज में बलि के बिना कोई भी पर्व, अनुष्ठान, समारोह संपन्न नहीं होता है। आदी समाज में अच्छी और बुरी आत्माओं (शक्तियों) पर विश्वास करते हैं। आदी समुदाय का धर्म प्रकृति से अच्छी-बुरी आत्माओं, अपने पूर्वजों से संबंधित है।

पूर्वजों को हितैषी परमात्मा का कर आदी जन अपने दिवंगत रूप स्वीकार करते हैं। इस तरह आदी समाज पूजा-पद्धति निर्धारित है। आदी संस्कृति और धर्म को पृथक देख नहीं सकते, आदी संस्कृति किसी न किसी रूप में धर्म से जुड़ी हुई है। आदी लोग अलौकिक शक्ति में विश्वास करता है। दैनिक प्रथाओं में दोन्यी-पोलो से जुड़ी आस्था को देख सकते हैं। दोन्यी-पोलो को साक्षी मानकर उनकी ईश्वरीय कृपा को प्रार्थना में परम्परागत विधि-विधान के अनुसार कर विवादों हैं- दोन्यीसीकीर कीरबुड़तलोक आसीयोनलोड़मयोनतुल में "आमकी- पेकी"[12] के द्वारा दोन्यीपोलो की सहायता की कामना करते हैं और भरी सभा में सत्य और न्याय की परीक्षा पवित्र सामग्री अंडे, पानी, मिट्टी, मिथुन, मुर्गी आदि से करते

दोन्यीदुलीग अमपीदाकसीम

पोलोमपोम अमरोमदाकसीम

दोन्यीसीकीर अ कीरबुड़ सो

दोन्यीसीको अमजुदीसीदाकसीम

पमीतीसीनाकम,

तासोदोयोबनाकम

लाकप्योबयोदमतनाकम

पोलोगोमतड़ तना कम

दोन्यी काकी नो,

पोलोयायोनो,

मीलोबलीअम

न्यामनेबलीअम

लाकप्योबली अम

मपी लाड़का।"[13]

भावानुवाद-

उबलते अंडे को खाली हाथों से निकालकर विवादित पक्षों में से एक दूसरे के मुँह पर फेंककर दोन्यी-पोलो के नाम पर शपथ लेते हैं। इसमें अपराधी का हाथ गर्म पानी से जल जाता है और निदर्दोष को न्याय मिलता है। यदि हाथ जलता है तो दोषी करार कर दंड या जुमार्ना देना होता है और बेगुनाह को कुछ नहीं

होता। 'आमकी' की प्रथा आदी समाज में सर्वमान्य है। आदी समाज में न्याय संबंधी या न्यायिक और धर्म अन्योन्याश्रित है। 'आमकी' शपथ और न्याय की पारंपरिक प्रथा का वर्तमान समाज में भी प्रचलन है। दोन्यी-पोलो पर लोक आस्था को देवी- देवताओं की उपासना के माध्यम से भी समझा जा सकता है। पर्वों पर पशु की देवता दादी बोते की आराधना की जाती है, जिससे प्राकृतिक आपदाओं और बीमारियों से पशुओं की रक्षा हो। इस संदर्भ में गाथा दृष्टव्य है-

"कोन्नोअड़ो आने दीदूमअम

दादी बोते नोक दोरनेकलेपकलनबीनामअ

युसीड़कलेपकलनबीनामअम

अड़ो आने दीदूम अ

दादी लुड़गुमअम, आन्दोकलुड़गुमअम

गुम्बीतुड़, कोपुड़लुड़गुमअम

आन्दोकआकबेपबेगेनामअम

दादी आकबमपबेमोलाड़का

कोपुड़आबो अ पोमोरगनामअम उसीड़आबोअमपोरमोमोलाड़क

सीलो, योगामरीबुड़अमपुननुदाक्कू दादी केपेलपेलबी दाक्कू ।"[14]

भावानुवाद - दादी बोते देवता, आज इस 'केपेल'[15] को तुम्हारे नाम चढ़ाया जा रहा है। अड़ोनाकार वासियों को तुमने पालतू पशुओं को दिया था फिर अड़ोताकार से हमने प्राप्त किए और आज तक पशुओं के पालन की व्यवस्था है।

आज भी मनुष्य ऋणी है, इस चढ़ावे के माध्यम से हमारा आभार स्वीकारें और हम पर, पशुओं पर कृपा दृष्टि बनी रहे। आज भी दादी, बोते देवता को केपेल देने की प्रथा प्रचलित है।

आदी ताड़गाम पर्व कोबो में गृह देवता गुमीनसोमीन की वंदना की जाती है। कोबो में युवक इकट्ठे होकर घर- घर जाकर गाते हैं-

"बोगनगुमीनसोयीनबूलू

ड़ोक आने गुमीन सी

बोगन आने गुमीनसी

गुमीनडूरीपुन्ने

मीअसीनकाडूमाड़

मीना नोगेताङ्गा

तोदीसीदेपुईदुनदी

यामेमेयोदुतेदू

तोदीसीपपुईदुमतूला

गुमीनतायूलूबो आद्ध।''[16]

ओ ! गृह देवता गुमीनसोयीन। डूरीपून्ने गाँव में हमारा कोई रखवाला, संरक्षक नहीं है। तुम्हीं रखवाला हो, कर्ता-धर्ता हो। अब पुराना साल बीत चुका है नव वर्ष में तुम्हारी स्तुति हेतु हम आए हैं, आप आशीर्वाद दें।

गृह निर्माण के पश्चात्य 'कुमनीमोजीन' यानी गृह प्रवेश समारोह में कुमनीमोजीनआबाड़ (गाथा) गाया जाता है। इस गाथा में घर को देखभाल करने वाले 'गुमीन-सोमीन' की वंदना की जाती है। उनके 'आशीष' की कामना के साथ घर के बनने की प्रक्रिया, उसकी उत्पत्ति, गृह निर्माण में प्रयोग आने वाली तमाम वस्तुओं की उत्पत्ति, उनकी महत्ता आदि पौराणिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक व्याख्याः प्रस्तुत की जाती है।

“गुमीन न नाने

पापाड़ड़ोलूताबू अ

निनू अ लाड़कू प

सोयीन न नाने

पापाड़ड़ोलूताबू अ

निनूसूलाड़कू प।''[17]

आदी समाज के जीवन को दोन्यी-पोलो प्रभावित करते हैं जो दादी बोते, गुमीनसोयीन आदि देवताओं के नामों से, अलग-अलग परिस्थितियों में उल्लेखित है। दोन्यी-पोलो का साथ प्रत्येक पक्षों पर है- जन्म से मृत्यु और उसके बाद भी। आदी में यह मान्यता है कि दोन्यी-पोलो से ही आत्मा की उत्पत्ति हुई है और आत्मा का घर दोन्यी-पोलो ही है। दोन्यी-पोलो के द्वारा ही आत्मा शरीर में आती है मरणोपरांत उसी के पास चली जाती है। आदी दोन्यी-पोलो को एक सुंदर भूमि मानती है। वह उसे दोन्यी-पोलोआमोड़ अर्थात 'आलोक/आत्मज्ञात की धरती' कहते हैं। यह स्वर्ग का ही रूप कह सकते हैं। जहाँ सदैव सुख, शांति और सुंदरता विद्यमान रहती है। उनकी अनन्त इच्छा है कि वह उस आलोक की सुंदर भूमि पर वापिस चला

जाए। इसलिए आदी समाज में मृतक की आत्मा को दोन्यी-पोलोआमोड़ तक पहुँचाने के लिए पड़े अर्थात शोक गाथा गाने की प्रथा है। इस संदर्भ में प्रकाश डालती पड़े की कुछ पंक्तियाँ

"दोनी आने आजी कोने

दोड़ोर अ ओलो अ योरने कोने आई।

पदीपेबायुगेबीकाई

पोसुमपदीपेबायुगेबीकाई आई।

दोन्यीआउन अ सुनसु तलो

पोलोलातबोड़ अ तातोड़को तलो,

नोआसूब अ सीबलीग अ दाकलाड़का आई। पोसुमआसूब अ सूबलोग अ दाकलाडका आई।

नोकाड़कुद अ कलूकुमा पका पोसुमकाड़कुद अ कलूकुमा पका आई।।"[18]

भावानुवाद-

ओ, मानव का बच्चा ! तुम्हारा शरीर सांसारिकता को छोड़कर आध्यात्मिकता में परिवर्तित हो चुका है। तुम अपने आध्यात्मिक यात्रा पर आगे बढ़ो, आलोक की भूमि पर अपना आध्यात्मिक निवास स्थापित करो। हमारी संसार की ओर कमी भी पीछे मुड़कर नहीं देखे।

आदी में यह मान्यता है कि वह कभी नहीं चाहता कि आत्मा कभी इंसानी दुनिया में वापस लौटे। यदि आत्मा इंसानी दुनिया की सीमा को पारकर इंसानों को देखें तो वे बीमारी से ग्रस्त होते हैं जिसे (ऊरोमकानाम) कहते हैं। पड़े में मृतक की आत्मा को मृत घोषित नहीं करते वे बायुक (गीत के अंश में वायुग अ) यानी रूप भेद/रूपांतरण कहकर संबोधित करते हैं। शारीरिक मृत्यु के पश्चात्य आत्मा दोन्यी-पोलोआमोड़ की तरफ अपनी आध्यात्मिक यात्रा शुरू करती है।

दोन्यी-पोलो की स्थापना किसी ने नहीं की। इसकी कोई प्रचारक का पैगंबर नहीं हैं। यह तो लोक आस्था का क्रमिक विकास है। आदी समाज को देखें तो लोगों में दोन्यी-पोलो के प्रति असीम आस्था है। आदी अनुष्ठानों, विश्वासों, मूल्यों आदि का संगठित रूप है- 'दोन्यी-पोलो'। दोन्यी-पोलो वही है जिसकी आराधना आदी समाज में युगों से करती आ रही है। इनके प्रति भक्ति इस समाज की जीवन शैली में झलकती है। इस समाज में शिशु के जन्म, विवाह, त्योहारों, खेती करने से पूर्व अच्छी फसल की कामना, पारंपरिक अनुष्ठानों, किसी के बीमार होने आदि पर वे दोन्यी-पोलो की कृपा दृष्टि और दिव्य सहायता के लिए अपनी आस्था को बनाए हुए हैं। (दोन्यी-पोलो का आध्यात्मिक अर्थ ईश्वर है, भौतिक अर्थ सूर्य (दोन्यी) और चन्द्रमा (पोलो), दार्शनिक अर्थ धार्मिक निष्ठा है।

इस तरह दोन्यी-पोली की अवधारणा के संबंध में मतैक्यभिन्न हैं। परंतु वे ईश्वरीय प्रतीक हैं जो सर्वमान्य हैं। आदी जीवन की संचालित कर सुमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने वाला है। दोन्यी (सूर्य) और पोलो (चन्द्रमा) पारंपरिक रूप से स्थापित आदी आस्था के प्रतीक हैं। दोन्यी-पोलो को विचारधाराओं के विकासपरक परिणाम कह सकते हैं। अंत में इन प्रश्नों के समाधान के रूप में इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अवश्य कोई अलौकिक, अदृश्य, प्रकृति से भी शाक्तिशाली तथा मनुष्यों के सामर्थ से ऊपर की ऐसी शक्ति है जिसका नियंत्रण विश्व की रचना लेकर इसके विनाश तक प्रसारित है। वह ही मनुष्य के भाग्य का नियामक है। इस शाक्ति को आदी जन 'रूना' (मार्ग दर्शक) की संज्ञा से अभिहित करते हैं। लगभग आदी समाज कि प्रत्येक प्रक्षों को धर्म प्रभावित करती है। आदी में पुजारी को मीरी, न्यीबो, न्यीबू, ताबे कहा जाता है। 'मीरी धर्म स्वरूप है, वह ईश्वरीय शक्ति का प्रतिनिधि है।"[19] पूजा-अनुष्ठान, पर्व-संस्कार की व्यवस्था मीरी द्वारा ही संपन्न होता है। 'मीरी आध्यात्मिक जगत और मनुष्य जगत के बीच मध्य रूप का कार्य करता है।"[20]

धर्म गुरुओं का जीवन सामान्य लोगों की ही तरह होता है। मीरी वंशगत या निर्वाचित नहीं होती। वह तो जन्मजात गुणों से युक्त होता है। आदी धार्मिक पक्ष में इनकी अहम भूमिका है। लोक गाथाओं को मीरी ही लोगों तक पहुँचाता है। मीरी द्वारा ही सारे धार्मिक कार्य संपन्न होते हैं। वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक, संसूचक है। जैसे सोलुड़ पर्व में गाया जाने वाला लीमीरलीबोम गाथा में जब निराकार, अनिश्चित लीमीरसोबो नामक पौराणिक जीव को पता लगाने हेतु निम्न धर्म गुरुओं के पिता दोयीड़ आमंत्रण देती है। सर्वप्रथम, सीकीड़कीपीर, बीसीकपीड़, दोयीड़रमीनमीनदी, दोयीरीकोपकोपसी, कीलूड़लुपाड़पासी गोरी, दोयीड़रोसी को बुलाया जाता है तत्पश्चात सबसे बड़े मीरी दादी कारकी उस निराकार जीत को इलीमीरसोबो' होंने की मतिव्यवाणी करता है। मिथकीयजीव लीमीरसोबो से मिथुन की उत्पत्ति होती है। इस संदर्भ में गाथा दृष्टव्य है-

"दलो मयूमदोयीड़ बोते

दोयीड़रकीअम रमो लनकाने

तुमीरकूअम रमो लनकाने इड़कोरुड़कोयमीरोली अमगोकलननासी अमला दोदूरकीअम रमो लड़काने
पदोदोदाड़अ दादी मलाड़

पदोइमूअमगोगदूमसीतुला

पदोदोबीअबीसी म

तुमीतागुममपुम्सुलन्दुला

तुमीबपुअमरामरालन नाम अ

मामपोड़आबल अ बगल रुनाको मामबीरीआनमतादारूनाकों मामबीरोलीअमगोकदूनासी

इड़कोमीबुअईपादड़अई

ताबे दोड़गुमअम कालू बीयेने लनीलीसामअमकाड़गोरबिये न अमला तुमीरकीअम रमो लनये दम अ

सीकीड़कीपीर अ ताबे बुलुम

बीसीकपीड़ अ ताबे बुलुम

दोयीरमीन अ मीनदी ताबे बुलुम

दोयीरीकोब अ कोपसीलनी ताबे बुलुम कीलूलुपाड़ अ पासीगुरी अ ताबेम दोयीरोसीअ ताब बुलुम

ताबे इमूअमगोकदुम सूतो

ताबे काड़केन अ काड़गोबिकुमाड़ इड़कोमीबो अ ताबे

ताबे दोड़गुमअम कालू।

बीयेन अ अमला

दोदूरकूअम रमो काकून अ

दादी कारकी ताबे म

ताबे रीकबोअमबोलीक तो

दादी कारकी अ ताबे ताबे

काड़केन अ काड़गोबोमकान अ क सेदीमापपोड़ अ लोदोड़को

ताबे तुतगअमबरकलनतो

सेदीदीलीड़ अ लीमीर।"[21]

वर्तमान समय में भी इन धर्मगुरुओं का समाज में विशिष्ट स्थान है। 'लीम-तागीलमीरी' चोर, बीमारी के कारण, आदि को ढूंढ़ निकालते हैं। पूवार्नुमान, भविष्यवाणी करने की मीरी में शक्ति होता है। आदी समाज के निर्माण में 'मीरी' का अहम योगदान है।

निष्कर्ष

लोकगाथाओं के द्वारा आदीयों ने अनुभव ज्ञान की प्रस्तुति की है। आदी गाथाओं में सुदीर्घ कथानक भी प्रधानता है। आबाड़ के कथानक इतने लंबे होते हैं कि एक ही गाथा को एक पुस्तक के रूप में लिखी जा सकती है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती आई गाथाओं में संगीत तथा नृत्य का अनूठा

साहचर्य है। गाथाओं को नृत्य करते हुए गाने की भी आदी प्रथा है। सृजनकर्ता के अज्ञात होने पर भी इतिहास काल से अद्यतन आबाड़ का स्वरूप जीवंत है ।

संदर्भ

1-2. मीरी / ताबे- आदी पादाम-मिओड़उपजाति पुजारी को मीरी/ताबे कहते हैं। लगभग अधिकतर उपजाति में इसी नाम से 'मीरी' अभिहित है। 'मीरी' गीत और गाने वाले को भी कहते हैं। आदी में एक शब्द के अनेक अर्थ हैं ।

3-4. न्यीबू/न्यीबो- आदी बोरी-बोकार, पाइलिबो, रासोउपजाति में 'मीर' को न्यीबू/न्यीबो कहते हैं।

5. गोमेमाकी- आदी बोरी उपजातिगोमे नायक गाथा गाने वालो को कहते हैं।

6. कारी- यह आदी बोरी उपजाति में आम्मा-चाचा, हादो बदे नादो, हाईकाड़ स्त्री केंद्रित आदि गाथाओं को गाने वाली स्त्री गाथाकार को कारी कहा जाता है।

7. आबाड़- आदी लोकगाथाओं को कहते हैं।

8. आयीतमीरी- रोग के उपचार में गाए जाने वाली गाथा।

9. कीरीड़- घुघरुओं के गुच्छे

10. सापेर-सालह- पीतल/तांबे का प्लेट

11. डॉ. ताई न्योरी, हिस्टरी एंड कल्चर ऑफ द आदीज, पृ. 266

12. आमकी-पेकी- शपथ, न्याय की परीक्षा

13. एम.सी. बेहरा, एस.के. चौधरी, इन्डिजिनॉस फेथ एंड प्रैक्टिस, पृ. 62-63

14. इन्डिजिनॉस फेथ एंड प्रैक्टिस, संपादक- एम.सी. बेहरा एस.के. चौधरी, पृ. 65

15. केपेल- एक प्रचलित आदी प्रथा जिससे अड़ोताकार (ग्रॅहली सभ्य समाज) वासियों ने शुरू किया। दादी बोते के संदर्भ में। इस प्रथा में बलि चढ़ाई जाती है।

16. तरुण कुमार भट्टाचर्जी, द ताड़गाम, पृ. 44

17. पोपोक्स लुमान आबाड़, ईटानगर सोलुड़ समिति द्वारा प्रकाशित 2015, पृ. 77

18. इन्डिजिनॉस फेथ एंड प्रैक्टिस, संपादक- एम.सी. बेहरा, एस.के. चौधरी, पृ. 53

19. धर्मराज सिंह, अरुणाचल की आदी जनजाति का समाजभाषिकी अध्ययन, पृ. 85

20. डॉ. वीरेन्द्र कुमार सिंह, अरुणाचल का लोकजीवन, पृ. 77

21. लीमीर लीबोम आबाड़, प्रकाशक आदी कल्चरल एण्ड लिटरेरी सोसाइटी, पासीघाट, 1978-1979.

संपर्क : आचार्य, हिंदी विभाग,

राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर अरुणाचल प्रदेश